ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

मई 2018 (प्रथम)

राजभवन व आर्य समाज शिलांग का दौरा

Email : aryapsharyana@yahoo.in

Visit us : www.apsharyana.org

श्री रमेश आर्य सभा वेदप्रचार अधिष्ठाता एवं उनकी टीम द्वारा किए गए वेद प्रचार कार्य की झलकियां।

गुरुग्राम

गुरुग्राम

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 195

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 14 अंक 7

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993, 7082783793

॥ ओ३म्॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

मई, 2018 (प्रथम)
1 से 15 मई, 2018 तक

इस अंक में....

1. जिज्ञासा-विमर्श (ईश्वर) 2
2. उड़ियो पंख पसार 4
3. पावन-पावन दयानन्द 5
4. उनकी आदर्श परम्पराएँ 7
5. सत्संग से सब कुछ मिल जाता है 8
6. आर्यजगत् के देदीप्यमान नक्षत्र-महात्मा हंसराज 9
7. महान् योद्धा महाराणा प्रताप 10
8. आर्यो! वैदिक धर्म का पालन करो 12
9. प्रेरक वचन व शेषभाग-प्रकरण 14
10. समाचार-प्रभाग 15

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

जिज्ञासा-विमर्श (ईश्वर)

❑ आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर

गतांक से आगे....

परमात्मा किसी जीव विशेष को किसी समुदाय विशेष की रक्षा वा दुष्टों के नाश के लिए भेजता हो, ऐसा भी नहीं है। यह कल्पना भी अवतारवादियों की है। परमात्मा तो जीवों के कर्मानुसार उनको जन्म देता है। जो जीव विशेष संस्कारयुक्त होते हैं, वे जगत् के कल्याण और दुष्टों के नाश में प्रवृत्त होते हैं। ऐसा करने पर परमात्मा उनको आनन्द, उत्साह आदि प्रदान करता है, किन्तु ऐसा कदापि नहीं है कि परमात्मा ने किसी जीव विशेष को इस कार्य में लगाया हो। यदि ऐसा मानेंगे तो जीव की स्वतन्त्रता न रहेगी। ऐसा मानने पर सिद्धान्त की हानि होगी। कर्मफल व्यवस्था की सिद्धि ठीक से न हो पायेगी। यदि कोई आत्मा किसी समुदाय की रक्षा करे तो दोष की भागी हो जायेगी, क्योंकि ऐसा कदापि नहीं हो सकता कि पूरे समुदाय में सभी लोग एक जैसे धर्मात्मा हो, उस समुदाय में उलटे लोग भी हो सकते हैं। समुदाय में होने से उनकी भी रक्षा करनी पड़ेगी जो कि न्याय न हो सकेगा। परमेश्वर न्यायकारी है, उसके द्वारा भेजी गई आत्मा को भी न्याय करना चाहिए जो कि वह कर न सकेगी।

अधिकतर लोगों की मान्यता है कि परमेश्वर किसी आत्मा को न भेजकर स्वयं अवतार लेते हैं। ऐसा करके परमात्मा सज्जनों की रक्षा और दुर्जनों का नाश करते हैं। इस प्रकार की मान्यता भी ईश्वर स्वरूप से विपरीत, वेद-शास्त्र के प्रतिकूल है, क्योंकि ईश्वर विभु है, अनन्त है, वह अनन्त प्रभु एक छोटे से शान्त शरीर में कैसे आ सकता है? परमेश्वर जन्म-मरण से परे है, फिर शरीर में आकर जन्म-मृत्यु को कैसे प्राप्त कर सकता है? परमेश्वर का अवतार मानने पर इस प्रकार की अनेक दोषयुक्त बातों को मानना पड़ेगा।

अवतारवादियों का अवतार मानने का मुख्य आधार ये दो श्लोक हैं–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥

इन श्लोकों में अवतार लेने का कारण बताया कि जब-जब धर्म की हानि होगी, तब-तब धर्म के उत्थान और अधर्म के नाश के लिए तथा श्रेष्ठों के परित्राण=रक्षा और दुष्टों के नाश के लिए ईश्वर अवतार लेता है। अब यहाँ विचारणीय यह है कि जिस परमात्मा ने बिना शरीर के इस सब ब्रह्माण्ड को रच डाला, हम सब प्राणियों के शरीरों की रचना की है, उस परमात्मा को कुछ क्षुद्र, दुष्ट व्यक्तियों को मारने के लिए शरीर धारण करना पड़े, यह बात बुद्धिग्राह्य नहीं है। इससे तो ईश्वर का ईश्वरत्व न रहकर ईश्वर का बहुत लघुत्व सिद्ध हो रहा है। यदि परमात्मा को यही करना है तो वह इस प्रकार के कार्य बिना शरीर के भी कर सकता है, क्योंकि वह पूर्ण समर्थ है।

गीता के उपरोक्त श्लोकों में अवतार का कारण हमने देखा, अब देवी भागवत पुराण में अवतार लेने का कारण देखिये। वहाँ लिखा है–

शपामि त्वां दुराचारं किमन्यत् प्रकरोपिते।
विधुरोहं कृतः पाप त्वयाऽहं शापकारणात्॥
अवतारा मृत्युलोके सन्तु मच्छापसंभवाः।
प्रापो गर्भभवं दुःख भुक्ष्व पापाज्जनार्दन॥

देवी भागवत के इन श्लोकों में अवतार का कारण धर्म की रक्षा वा अधर्म के नाश करने के लिए नहीं कहा, अपितु भृगु का शाप कहा है। अर्थात् महर्षि भृगु ने विष्णु को दुराचार कर्म के कारण शाप दिया, उनके शाप के प्रभाव से विष्णु का मृत्युलोक में अवतार हुआ। गीता के और देवी भागवत पुराण में अवतार के कारणों में परस्पर विरोध है। और देखिये–

बौद्धरूपस्त्वयं जातः कलौ प्राप्ते भयानके।

× × × ×

वेदधर्मपरायन् विप्रान् मोहयामास वीर्यवान्।
निर्वेदा कर्मरहितास्त्रवर्णा तामासान्तरे॥

यहाँ गीता से सर्वथा विपरीत अवतार का कारण कहा है। गीता धर्म की रक्षा को कारण कहती है और यहाँ तो धर्म के नाश के लिए अवतार ले लिया, अर्थात् भागवत पुराण कहता है–भगवान् ने बुद्ध का अवतार लेकर, सबको विरुद्ध उपदेश देकर नास्तिक बनाया तथा वेदमार्ग का नाश किया। यहाँ ये अवतारवादियों के ग्रन्थ परस्पर विरुद्ध कथन कर रहे हैं।

यथार्थ में तो ईश्वर के किसी भी रूप में जन्म धारण करने की कल्पना ही युक्ति व शास्त्र विरुद्ध है, क्योंकि ईश्वर को किसी भी प्रकार के सहारे की आवश्यकता नहीं,

चाहे वह सहारा किसी शरीर का हो अथवा किसी अन्य प्राणी का। परमेश्वर अपने सब कार्य करने में समर्थ है, उसको कोई अवतार लेने की आवश्यकता नहीं है।

वेद में ईश्वर को '**अकायमव्रणमस्नाविरम्**' कहा है। वह परमात्मा सूक्ष्म और स्थूल शरीर के बन्धन से रहित है, अर्थात् इन बन्धनों में नहीं पड़ता। श्वेताश्वेतर उपनिषद् में ऋषि ने कहा–

वेदाहमेतमजरं पुराणं सर्वात्मानं सर्वगतं विभुत्वात्।
जन्मनिरोधं प्रवदन्ति यस्य ब्रह्मवादिनो हि प्रवदन्ति नित्यम्॥
(4.21)

अर्थात् वह परमात्मा अजर है, पुरातन (सनातन) है, सर्वान्तर्यामी है, विभु और नित्य है। ब्रह्मवादी सदा उसका बखान करते हैं। वह कभी जन्म नहीं लेता।

उपरोक्त सभी प्रमाणों से सिद्ध हो रहा है कि परमात्मा जीव के कर्मानुसार उसके भोग के लिए शरीर स्थान, समुदाय आदि देता है न कि अपनी इच्छा से किसी का नाश वा रक्षा के लिए उसको भेजता है और ऐसे ही स्वयं भी अवतार लेकर कुछ नहीं करता, अर्थात् स्वयं शरीर धारण करके किसी की रक्षा वा नाश नहीं करता।

(ख) ईश्वर के सर्वशक्तिमान् होने का अर्थ यह नहीं कि वह कुछ भी करे वा सब कुछ करे। तात्पर्य यह कि ईश्वर सब कुछ नहीं कर सकता। वह इसलिए, क्योंकि वह शुद्ध पवित्र है, सर्वज्ञ है, सदा अपने नियमों का पालन करने वाला है।

इस विषय में महर्षि दयानन्द प्रश्नोत्तर रूप में लिखते हैं–

"**प्रश्न**-ईश्वर सर्वशक्तिमान् है वा नहीं? **उत्तर**-है, परन्तु जैसा तुम 'सर्वशक्तिमान्' शब्द का अर्थ जानते हो, वैसा नहीं, किन्तु सर्वशक्तिमान् शब्द का यही अर्थ है कि ईश्वर अपने काम अर्थात् उत्पत्ति, पालन, प्रलय आदि और सब जीवों के पुण्य-पाप की यथायोग्य व्यवस्था करने में किंचित् भी किसी की सहयता नहीं लेता, अर्थात् अपने अनन्त सामर्थ्य से ही अपना सब काम पूर्ण कर लेता है।"

प्रश्न-हम तो ऐसा मानते हैं कि ईश्वर जो चाहे सो करे, क्योंकि उसके ऊपर दूसरा कोई नहीं?

उत्तर-वह क्या चाहता है? जो तुम कहो कि सब कुछ चाहता और कर सकता है, तो हम तुमसे पूछते हैं कि परमेश्वर अपने को मार, अनेक ईश्वर बना, स्वयं अविद्वान् हो चोरी, व्यभिचारादि पापकर्म कर और दु:खी भी हो सकता है? जैसे ये काम ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के विरुद्ध हैं, तो जो तुम्हारा कहना है कि 'वह सब कुछ कर सकता है' यह कभी नहीं घट सकता, इसलिए सर्वशक्तिमान् का अर्थ जो हमने कहा वही ठीक है।"

यहाँ पर महर्षि की इन बातों से स्पष्ट है कि ईश्वर अपने गुण-कर्म-स्वभाव के विरुद्ध कभी कुछ नहीं करता, नहीं कर सकता।

अवैदिक मान्यता वाले पौराणिक अथवा कुरान, बाइबिल वाले ईश्वर के सर्वशक्तिमान् होने का अर्थ वह करे न करे, कुछ भी करे-ऐसा मानते हैं। जब ईसाई और मुसलमान ईसामसीह या मुहम्मद साहब पर अपना ईमान लाने की बात करते हैं तो उनका तात्पर्य यह होता है कि पैगम्बर की सिफारिश करने पर खुदा ईमानवालों के गुनाह माफ कर देता है, क्योंकि वह जो चाहे कर सकता है, वह गुनहगारों को माफ भी कर सकता है और बेगुनाहों को सजा भी दे सकता है। इनकी मान्यता है कि जब हम मामूली इंसान किसी की गलती को माफ कर सकते हैं, तो हमसे बड़ा खुदा क्यों नहीं कर सकता? वे यह नहीं समझते कि ईश्वर का बड़प्पन कानून-सृष्टि के नियमों को तोड़ने में नहीं, अपितु स्वयं उनका पालन करने और अन्यों से कराने में है। यदि नियामक ही नियमों का उल्लंघन करने लगे तो वह नियामक ही कहाँ रहा?

इसलिए परमेश्वर ने जो सृष्टि आदि में संविधान बना दिया, उसका उल्लंघटन न स्वयं करता, कर सकता और न उसकी प्रजा करती, कर सकती। सृष्टि विपरीत परमात्मा कुछ भी नहीं करता, कर सकता। इसलिए यह कहना सर्वथा असंगत है कि "ईश्वर सब कुछ कर सकता है, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है।"

(ग) आपके प्रश्न का उत्तर समाधान (क) में अधिकतर आ चुका है, फिर कुछ और लिखते हैं। परमेश्वर अपनी इच्छा मात्र से किसी को कुछ नहीं देता। जो कुछ परमात्मा हमें देता है उसके लिए हमारी पात्रता होती है। जीवों के कर्मों के बिना परमेश्वर धन, बल, प्रतिष्ठा, सफलता आदि नहीं दे सकता। यह सब हम जीवों के पुरुषार्थ व प्रारब्ध के आधार पर परमात्मा प्रदान करता है।

यदि परमात्मा अपनी इच्छा से (जीवों के कर्मों की अपेक्षा किये बिना) किसी को सुख अथवा दु:ख देने लग जाये तो परमात्मा न्यायकारी सिद्ध न हो पावेगा। परमात्मा का न्याय इसी में है कि जिसके जैसे कर्म, पुरुषार्थ हैं, उसको वैसा ही फल प्रदान करना। **क्रमशः अगले अंक में......**

उड़ियो पंख पसार

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

मनुष्य बहुत चतुर प्राणी है। वह अपने गणित से सभी आविष्कार कर लेता है। किसी ने कहा है–

''अब हम सांची कहत है उड़ियो पंख पसार'' हम आप से सत्य ही सत्य कह देते हैं, सौ टके सत्य बात कहते हैं और सत्य बात यह है–''उड़ियो पंख पसार।'' अपने

भीतर के आकाश में पंखों को पसारो और उड़ो। कथा-कहानियों में मत उलझे रहो। यह उधार का ज्ञान काम नहीं आएगा। अपने ही पंखों को फैलाओ। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम उड़े, यौगिराज श्रीकृष्ण उड़े, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती उड़े, महावीर, बुद्ध उड़े। तुम्हें उड़ना होगा। अपने ही पंख काम आयेंगे।

उड़ियो पंख पसार। पसारो अपने पंखों को। साहस जुटाओ। भय तो लगता है। भीतर जाने में भय लगता है, क्योंकि वहाँ भीतर हम बिल्कुल अकेले हो जाते हैं। बाहर तो अपने हैं, प्रियजन हैं, बन्धु-बान्धव हैं, मित्र हैं, पति-पत्नी, पुत्र-पिता सब हैं। बाहर तो सारा संसार है परन्तु भीतर तो इनमें से कोई भी नहीं है। अकेले होने से हम भयभीत हैं, अकेले होने में बड़ी घबराहट होती है, कहीं डूब न जायें, कहीं सहारे टूट न जायें। अत: हम दूसरों को पकड़े रहते हैं। पति पत्नियों को और पत्नियाँ पतियों को पकड़े हुए हैं और एक जन्म में ही नहीं सात-सात जन्मों की बात की जाती है। जो कल तक जन्मों-जन्मों की बात किया करते थे, वे आज सम्बन्ध विच्छेद करने के लिए न्यायालयों में खड़े मिलते हैं।

लोग सम्बन्ध बना रहे हैं, अमरता के जाल गूंथ रहे हैं, एक दूसरे को झूठे आश्वासन दे रहे हैं, भीतर जायेंगे तो अकेले हो जायेंगे। यह अकेलापन या भय हमें सता रहा है। जब कोई पहली बार भीतर प्रवेश करता है तो उन्हें लगता है कि अन्दर अन्धकार ही अन्धकार है, प्रकाश नहीं है। धीरे-धीरे अन्धकार को खोदते-खोदते प्रकाश मिल ही जाता है। हमने जन्मों-जन्मों तक तो अन्धकार एकत्रित कर रखा है। उसकी परतें इतनी गहरी हो गई उनकी खुदाई भी तो गहरी करनी पड़ेगी। भूमि में जल तो है। जैसे कोई व्यक्ति कूआँ खोदता है तो एकदम जल की प्राप्ति तो नहीं हो जाती। यद्यपि भूमि में जल तो है परन्तु पहले कंकर-पत्थर आयेंगे, कूड़ा-कचरा आयेगा, फिर गीली मिट्टी आएगी, फिर गन्दा पानी आएगा। ऐसे खोदते जाओ, खोदते जाओ, एक दिन निर्मल झरना उपलब्ध हो जाएगा। ऐसे ही अन्दर की खुदाई करनी होगी।

उतनी प्रतीक्षा नहीं है हमें। हम चाहते हैं कि शीघ्र सारा कार्य सम्पन्न हो जाये। कोई दूसरा ही इस कार्य को कर दे। हम पण्डितों और पुरोहितों के जाल में पड़े हुए हैं। हम सोचते हैं कि ये हमारे लिए प्रार्थना कर लें, ये हमारे लिए पूजा कर लें।

मेरे पास लोग आकर कहते हैं, ''हमारे लिए आप परमात्मा से प्रार्थना करें।'' मैंने कहा, ''श्रीमान् जी! यह भी खूब रही। पाप करो तुम, प्रार्थना करूँ मैं। पाप करते समय मुझसे क्यों नहीं पूछते? अरे भाई! मेरा खाया मेरे शरीर को पुष्ट करेगा। मेरी की गई प्रार्थना मेरे जीवन में सुधार लाएगी। यह प्रार्थना कोई व्यापारिक लेन-देन नहीं है। मेरी प्रार्थना मेरे काम आएगी, तुम्हारे नहीं। इसलिए अपनी यात्रा तुम्हें स्वयं ही करनी होगी।''

विचारिये! तुम कब से भीतर नहीं गये, स्मरण है। विचारोगे तो पता चलेगा कि कभी प्रयास ही नहीं किया। जब प्रयास ही नहीं किया तो भय अवश्य लगेगा।

कई सज्जन मेरे पास आते हैं, बस उनके मुख से एक ही स्वर निकलता है, ''आपका आशीर्वाद चाहिये।'' मैं उनसे कहता हूँ, ''भाई! केवल मेरे आशीर्वाद से कुछ नहीं बनेगा, ध्यान तुम्हें स्वयं करना होगा, प्रार्थना तुम्हें स्वयं करनी होगी। मैंने उनसे कहा कि यदि मुझ पर इतना विश्वास है तो तुम ऐसा करो, दुकान भी बन्द करो, धन्धा भी बन्द करो, फिर क्या केवल मेरे आशीर्वाद से बात बन जाएगी।'' तब वे असमंजस में पड़ जाते हैं और कहते हैं, ''यह बहुत क़ठिन है।'' यदि तुम स्वयं कुछ नहीं करोगे तो केवल आशीर्वाद से कुछ नहीं बनेगा। वास्तविकता तो यह है कि कोई श्रम तो नहीं करना चाहता, केवल आशीर्वाद और गुरुकृपा का सहारा लेना चाहता है। वे परमात्मा को पाना तो चाहते हैं, परन्तु इसके लिए पुरुषार्थ नहीं करना चाहते।

शेष पृष्ठ 14 पर....

पावन-पावन दयानन्द

❑ इन्द्रजित्देव 9466123677

गतांक से आगे....

महर्षि से पूर्व आचार्यों शंकर, रामानुज, माधवाचार्य या निम्बार्क आदि की पहुँच गीता, वेदान्त दर्शन व उपनिषद् तक ही रही। वेद तक पहुँचने का प्रयास उन्होंने नहीं

किया, न ही उन्हें वेदों के ऊटपटांग भाष्य देखकर उन्हें शुद्ध करने की चिन्ता ही हुई। यह चिन्ता हुई तो केवल दयानन्द को हुई। स्वामी दीक्षानन्द के शब्दों में, 'दयानन्द यदि देह है तो वेद उसका आत्मा।' पवित्र वस्तु की पवित्रता को पवित्र व्यक्ति ही जान सकता है। संसार की पवित्रतम वाणी वेद को अपवित्रता, अवैज्ञानिकता, तर्कहीनता, अश्लीलता, अनुपयोगिता तथा गर्वहीनता के भंवरजाल से निकाल वेद को पावन, पवित्र, वैज्ञानिक, तर्कयुक्त, सभ्य, परमोपयोगी सिद्ध करने वाले महर्षि को सश्रद्ध नमन!

वेदों का डंका दुनिया में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।
करते थे हमेशा चीख-चीख, अपमान जो पावन वेदों का,
सिर उनका वेदोंके आगे झुकवा दिया ऋषि दयानन्द ने॥

(प्रकाशार्य)

पौराणिक पण्डितों ने 18 पुराण बनाकर वेदों के स्थान पर प्रतिष्ठित कर रखा था। ये पुराण पृथक्-पृथक् काल में पृथक्-पृथक् व्यक्तियों द्वारा रचे गए थे परन्तु प्रचार यह किया गया था कि इनके रचनाकार ऋषि व्यास जी हैं। राजा भोज के राज्य में मार्कण्डेय पुराण और शिवपुराण बनाकर प्रचारित किए व्यास जी के नाम पर। इसका समाचार राजा भोज को मिला तो उसने रचनाकारों के हाथ कटवा दिए थे तथा यह आदेश दिया था कि जो भी व्यक्ति अपना ग्रन्थ रचे, वह अपने नाम से प्रचारित करे, ऋषि-मुनियों के नाम से नहीं। पुराणों में मूर्तिपूजा, तीर्थों के प्रमाण हैं तो कथित भगवानों के चरित्र दोषों का वर्णन भी है। विष्णु भगवान् जलन्धर नामक राक्षस से पराजित होकर उसकी पत्नी वृन्दा से जलन्धर का मेकअप करके दुराचार करता है तो ब्रह्मा अपनी पुत्री से ही संभोग करता है। जो मनुष्य प्रातःकाल में 'शिव' अर्थात् लिंग व उसकी मूर्ति का दर्शन करे तो रात्रि में किया हुआ, मध्याह्न में दर्शन से जन्म भर का, सायं में दर्शन करने से सात जन्मों के पाप छूट जाते हैं। 'शिवपुराण' में शैवों ने शिव को परमेश्वर मानकर विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र व सूर्यादि को उसका दास बताये हैं तो 'विष्णुपुराण' में विष्णु को परमात्मा माना और शिव आदि को विष्णु के दास। देवी भागवत पुराण में देवी को परमेश्वरी जबकि शिव, विष्णु आदि उसके किङ्कर बनाये। 'भागवत' में विष्णु की नाभि से कमल, कमल से ब्रह्मा, ब्रह्मा के दाहिने पग से अंगूठे से स्वायंभाव और बायें अंग से सत्यरूपा राणी, ललाट से रुद्र और मरीचि आदि पुत्र, उनसे दक्ष प्रजापति, उनकी तेरह लड़कियों का विवाह कश्यप से, उनमें से दिति से दैत्य, दनु से दानव, अदिति से आदित्य, विनता से पक्षी, कद्रू से सर्प, सरमा से कुत्ते व स्याल आदि और अन्य स्त्रियों से हाथी, घोड़े, ऊँट, गधा, भैंसा, घास, फूस और बबूल का वृक्ष कांटे सहित उत्पन्न हो गया।''

महर्षि दयानन्द ने महर्षि व्यास के नाम पर पुराणों में लिखी असत्य, तर्कहीन, अश्लील व अवैज्ञानिक बातों पर दुःखी हो, 'सत्यार्थप्रकाश' के एकादश समुल्लास में लिखा, ''जो आज पुराणों के कर्त्ता व्यास जी होते तो उनमें इतने गपोड़े न होते। क्योंकि शारीरिक सूत्र, योगशास्त्र के भाष्य आदि व्यासोक्त ग्रन्थों के देखने से विदित होता है कि व्यास जी बड़े विद्वान्, सत्यवादी, धार्मिक योगी थे। वे ऐसी मिथ्या कथा (एं) कभी न लिखते और इससे यह सिद्ध होता है कि जिन सम्प्रदायी परस्पर विरोधी लोगों ने भागवतादि नवीन कपोलकल्पित ग्रन्थ बनाए हैं, उनमें व्यास जी के गुणों का लेश भी नहीं था। वेदशासत्र विरुद्ध असत्यवाद लिखना व्यास जी सदृश्य विद्वानों का काम नहीं, किन्तु यह क़ाम विरोधी, स्वार्थी, अविद्वान् पामरों का है।'' दयानन्द द्वारा व्यास ऋषि को दी इस 'क्लीन चिट' से सिद्ध है कि व्यास जी के प्रति उनके मन में कितनी अधिक पावन भावना थी। महर्षि दयानन्द के अतिरिक्त इतिहास में किसी अन्य व्यक्ति ने आज तक व्यास ऋषि की पावनता पर लगी धूल हटाने का प्रयास नहीं किया। इतिहास इसके लिए महर्षि का सदैव ऋणी रहेगा।

पुराणों में एक पावन महापुरुष का निकृष्ट, अश्लील, चोर, जार, भोगी के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिनका नाम श्री कृष्ण है। उनकी सोलह हजार एक सौ आठ रानियाँ

थीं। अमोघ रति ईश्वर कृष्ण की जितनी पत्नियाँ थीं, उन सब में उन्होंने प्रत्येक से दस-दस पुत्र किए। श्रीमद्‌भागवत के अनुसार रास-क्रीडा के समय उनके साथ व्यभिचार का स्पष्ट उल्लेख है। दशम स्कन्ध के अध्याय 48 में कुब्जा के साथ व्यभिचार का उल्लेख है। राधा वृषभानु वैश्य की कन्या थी उसने राधा का विवाह रायाण वैश्य से कर दिया। रायाण यशोदा का भाई था अर्थात् राधा-कृष्ण जी की मामी लगती थी (ब्रह्मवैवर्त पुराण) परन्तु इसी पुराण में राधा-कृष्ण के गुप्त अनुचित सम्बन्ध का भी वर्णन है। कृष्ण पर कुत्सित व धूर्ततापूर्ण आरोप लगाए हैं। परस्त्रीगमन का द्वार पुराणों ने कृष्ण के माध्यम से खोल दिया तो उनके भक्तों को क्यों संकोच? कृष्ण की वास्तविक पत्नी रुक्मिणी का कोई नाम भी नहीं लेता परन्तु कल्पित प्रेयसी राधा की ही पूजा होती है। धर्म की आड़ में यह व्यभिचार को प्रोत्साहन देना नहीं तो और क्या है? प्रमाण यह है-

परदाररता ये च ये नरा अजितेन्द्रियाः।
मथुरावासिनः सर्वे ते देवा न विग्रहाः॥

(वाराह पुराण 166/61)

अर्थात् मथुरा के निवासी दूसरों की स्त्रियों से व्यभिचार करने वाले सभी कामी लोग देवता हैं, यह निर्विवाद है। नैतिकता, मर्यादा, आदर्श व सिद्धान्तों का स्पष्ट हनन आप पुराणों के कृष्ण के चरित्र में देख सकते हैं। अंकुशता की सभी मर्यादाएं तोड़ने वाले पुराणों में कृष्ण चरित्र के साथ खुलकर खिलवाड़ किया गया तो भी हिन्दू जाति की आंख नहीं खुली।

ईसाई प्रचारकों ने कृष्ण के पुराणमय चरित्र को आधार बनाकर सामान्य व अशिक्षित वर्ग में ईसामसीह की पवित्रता व महानता का बहुत प्रचार किया, क्योंकि श्रीकृष्ण का यह चरित्र समाज को निकृष्ट प्रेरणा देता रहा है। ईसाई मिशनरी आज भी अपने क्रार्यक्रमों में ईसामसीह व कृष्ण जी के चित्र लटकाकर दर्शकों व श्रोताओं से पूछते हैं-''इनमें एक हमारा ईश्वर ईसा तुम्हारे पाप लेकर फांसी पर लटक गया जबकि दूसरा, तुम्हारा ईश्वर नदी में स्नान कर रही नारियों के वस्त्र लेकर पेड़ पर चढ़ बांसुरी बजाता है। स्नान कर रही नारियाँ उससे वस्त्र मांगती हैं, परन्तु वह उन्हें नग्न देखता व बांसुरी ही बजाता रहता है। बताओ! इन दोनों में कौन परोपकारी व महान् है?'' सामान्य लोगों का उत्तर क्या होता, यह आप सहज ही सोच सकते हैं। योगेश्वर कृष्ण के चरित्र का यह प्रभाव बड़े-बड़े उपदेशकों, संन्यासियों तथा जनसामान्य पर रहा परन्तु इसका निराकरण महर्षि दयानन्द के अतिरिक्त किसी ने नहीं किया। सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में लिखते हैं-''देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्तपुरुषों के सदृश है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी नहीं किया हो, ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी में लगाए हैं।'' एक पावन महापुरुष पर लगे आरोपों पर झुठलाकर उसको **उज्वल करेक्टर सर्टिफिकेट** देकर उसे पावन-पवित्र घोषित करने के महर्षि के सद्प्रयास की जितनीभी कृतज्ञता ज्ञापित की जाए, वह न्यून है।

महर्षि दयानन्द से पूर्व अधिक लोग छः शास्त्रों में परस्पर सैद्धान्तिक विरोध देखते-मानते थे। पावन शास्त्रों को अस्वीकारते थे परन्तु महर्षि ने इसका खण्डन करके इन्हें परस्पर अविरोधी घोषित किया-''विरोध उसको कहते हैं कि एक कार्य में एक ही विषय पर विरुद्धवाद होवे। छः शास्त्रों में अविरोध देखो इस प्रकार है-मीमांसा (दर्शन) में-'ऐसा कोई भी कार्य जगत् में नहीं होता कि जिसके बनाने में कर्म चेष्टा न की जाय।' वैशेषिक (दर्शन) में-'समय न लगे बिना बने ही नहीं।' न्याय (दर्शन) में-'उपादान कारण न होने से कुछ भी नहीं बन सकता।' योग (दर्शन) में-'विद्या, ज्ञान, विचार न किया जाय तो नहीं बन सकता।' सांख्य (दर्शन) में-'तत्त्वों का मेल न होने से नहीं बन सकता।' और वेदान्त (दर्शन) में-'बनाने वाला न बनावे तो कोई भी पदार्थ उत्पन्न न हो सके।' इसलिए सृष्टि छः कारणों से बनती है। उन छः कारणों की व्याख्या एक-एक की एक-एक शास्त्र में है। इसलिए उनमें विरोध कुछ भी नहीं। जैसे छह पुरुष मिलकर एक छप्पर उठाकर भित्तियों पर धरें, वैसा ही सृष्टि रूप कार्य की व्याख्या छह शास्त्रकारों ने मिलकर पूरी की।''

(सत्यार्थप्रकाश, अष्टम समु०)

क्रमशः अगले अंक में......

उनकी आदर्श परम्पराएँ

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

ऋषियों ने वेदज्ञान का साक्षात् किया। समाधि योग से उनका चित्त भी निर्मल था। अत: आप्त होने से उनके संदेश आदर्श परम्पराओं के वाहक बने। अत:

आर्यसमाज के ठेकेदार इस विषय में अवश्य सचेत रहें कि ऋषियों की निन्दा करना, ऋषिनिन्दकों को आश्रय देना, ये दोनों बातें समाज की आदर्श परम्पराओं के लिए घातक हैं। यहाँ हम ऋषि परम्परा का निर्वहन करने वाले ऋषि दयानन्द द्वारा संकेतिक एक आदर्श परम्परा का उल्लेख करते हैं।

ऋषि दयानन्द पञ्चायत के पक्षधर थे। वे बहुधा झगड़ों को परस्पर मिलकर निपटाने का संदेश देते थे। अनूप शहर में अपने उपदेश में उन्होंने कहा था कि हर ग्राम में एक पंचायत होनी चाहिए और कई-कई ग्रामों के ऊपर एक न्यायसभा होनी चाहिए और इसी सभा के द्वारा सब मुकदमों का निर्णय होना चाहिए, तभी लोग मुकदमेबाजी के जाल से छुटकारा पा सकते हैं। पञ्चायत और खापों के पक्ष में इससे सार्थक और क्या कथन होगा? यह तो बात हुई पंचायतों के अस्तित्व के औचित्य की, अब बात आती है कार्यशैली की। जब धर्म को जानने वाले, मानने वाले लोग ऐसे व अन्य संगठनों का नेतृत्व करते हैं तो सत्य न्याय होने से मनुष्य समाज संगठित होता है। जब धर्म को न जानने वाले न मानने वाले लोग ऐसे संगठनों का नेतृत्व करते हैं तो समाज के पीछे सैकड़ों प्रकार के पाप लग जाते हैं, मनुष्य समाज उलझन, विघटन, असमंजस का शिकार बनता है।

पिछले दिनों ऐसी ही स्थिति कुछ समाज के ठेकेदारों ने रामपालदास को आश्रय देकर बना दी। आज इस संदर्भ में सोशल मीडिया पर एक ही विचारधारा पर बने ग्रुपों पर विचित्र स्थिति बन गई है। एक व्यक्ति यदि जाति के नाम पर रामपाल दास की पुष्टि करता है तो दूसरा उसके कृत्यों के नाम पर खण्डन करता है। बुराई को आश्रय देने वाले ठेकेदार इस द्वन्द्व को सुलझाने में असमर्थ हैं, वे इस प्रकरण से गायब हैं। दूसरी ओर रामपालदास के शिष्य इन ग्रुपों में सफलता पूर्वक घुसपैठ कर विघटन का बीज बोकर ऋषि व आर्यसमाज के प्रति द्वेष को अंजाम दे रहे हैं। हमने पहले भी सचेत किया है कि जाति के नाम पर बुराई की पुष्टि समाज के लिए घातक है, रावण के संदर्भ में हमने पहले ऐसे संकेत दिए थे।

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जैसे आर्यनेताओं से लेकर स्वामी ओमानन्द और फिर आचार्य बलदेव ने सदैव पंचायतों, खापों से मिलकर समाज को कुरीतियों, पाखण्ड से बचाने का कार्य किया। सिद्धान्ती जी ने सर्वखाप के इतिहास की खोज, संरक्षण का अनुपम अद्वितीय कार्य किया। जब-जब खाप पंचायतों के औचित्य पर प्रश्नचिह्न लगे आर्य विद्वानों ने अपनी लेखनी द्वारा पंचायत दोषियों का मुंहतोड़ उत्तर दिया। अत: ऋषि व आर्यसमाजी द्वेषी रामपालदास को आश्रय देने वाले कृतघ्न तथा आदर्श परम्पराओं को मिटाने वाले हैं।

वर्तमान में 'परोपकारी' में श्रीयुत राजेन्द्र 'जिज्ञासु' ने कम्युनिस्टों द्वारा मुंशी प्रेमचन्द के बारे में भ्रामक प्रचार का खण्डन किया है। हमें भी यहाँ एक प्रसंग की याद आती है। 'पंचपरमेश्वर' कहानी लिखने वाले मुंशी प्रेमचन्द भी पंचायतों द्वारा न्याय के पक्षधर थे। कम्युनिस्ट विचारधारा में न पंचायत है न परमेश्वर है? 'दो बैलों की कथा' में जो कसाई बैलों को खरीदने आता है, बैलों का जिस प्रकार मांस में अंगुलियां गाड़कर निरीक्षण करता है, बैल जिस प्रकार घबराते हैं, फिर उसे भगा देते हैं। यह भावनात्मक वर्णन, बैलों के उस खरीददार का वर्णन, यह सब क्या कम्युनिस्ट विचारधारा को सहन होगा? यहाँ बात पंचायतों की आदर्श परम्परा की चल रही थी। पंचायतों का, खापों का अस्तित्व निश्चित सार्थक है। साथ ही सचेत रहें कि इनके मूल में ऋषियों द्वारा प्रतिपादित मर्यादाएँ सदैव रहनी चाहिएँ, विघटनकारी धर्मद्वेषी ताकतों से सावधान रहें। आर्यनेताओं का भी व्यक्तित्व ऐसा हो कि जिसका प्रभाव सर्वत्र हो।

सत्संग से सब कुछ मिल जाता है

❑ महात्मा चैतन्यमुनि

नीतिकारों का कहना है-सतां हि संगः सकलं प्रसूते। अर्थात सज्जन पुरुषों की संगति से सब कुछ मिल जाता है, क्योंकि सत्संगति से व्यक्ति को धर्म के कार्य करने की प्रेरणा मिलती है और धर्म ही सब सुखों का आधार है। सत्संग का अर्थ ही है-सतां सज्जनानां संगः। अर्थात् सज्जनों के संग को ही सत्संग कहते हैं। सज्जन धार्मिक महापुरूषों एवं विद्वानों के सुन्दर उपदेश सुनना और उसी के अनुसार आचरण करना सत्संग कहलाता है। प्रतिदिन जो पंचायतन पूजा करते हैं उसका भी सत्संग में ही समावेश हो जाता है। 'आर्योद्देश्यमाला' नामक पुस्तक में सत्संग के विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कहते हैं कि जिस करके (के द्वारा) झूठ से छूटके, सत्य की ही प्राप्ति होती है उसको 'सत्संग' और जिस करके (के द्वारा) पापों में जीव फंसे उसको 'कुसंग' कहते हैं।

महाभारत में साधु, सज्जनों के समागम पर स्थान-स्थान पर निर्देश दिया गया है। एक स्थान पर भीष्म पितामह जी युधिष्ठर को कहते हैं कि यदि पुरुष सत्संग अर्थातू सत्पुरुषों का संग करे तो उसका वह संग कभी व्यर्थ नहीं जाता है। व्यक्ति को सदा सत्पुरुषों के ही संग में रहना चाहिए। विद्या में बढ़े-चढ़े पुरुषों का सेवन करना चाहिए। जो उसके निकट रहता है, उस पर उसका रंग चढ़ जाता है, जैसे नील पक्षी मेरु पर्वत का आश्रय लेने से सुवर्ण के समान रंग का हो जाता है। धर्म और सुख की प्राप्ति के लिए राजा को भी सज्जनों की संगति करनी चाहिए, क्योंकि उनसे सेवित राजा अत्यन्त महत्त्व को प्राप्त होकर सुशोभित होता है।

महामना शंकराचार्य जी ने जिन तीन दुर्लभ वस्तुओं का मिलना बहुत कठिन बताया है उनमें से एक सत्संग भी है। जिस प्रकार थोड़ा-सा कुंसग हमारे जीवन को बर्बाद करके रख सकता है उसी प्रकार सत्संग हमारे बिगड़ते हुए जीवन को सवांर सकता है। इसलिए महात्मा तुलसी जी कहते हैं-

एक घड़ी आधी घड़ी आधी से पुनि आध।
तुलसी संगत साध की कटे कोटि अपराध।।

यह ठीक है व्यक्ति के किए हुए पाप कभी माफ नहीं होते हैं मगर किसी सन्त-महात्मा की संगति से यदि उसके जीवन की विचारधारा बदल जाए तो उसके द्वारा जो आगे के जीवन में पाप कर्म होने वाले थे, वह उनसे बच जाएगा। कहते हैं कि कोशल नरेश प्रसेनजित् के राज्य में अंगुलिमाल नाम का एक डाकू रहता था। लूट-पाट और हत्या आदि करना उसका प्रतिदिन का ही काम था। वह जिस भी व्यक्ति की हत्या करता था उसकी एक अंगुली काटकर अपनी माला में पिरो लेता था। इसीलिए उसका नाम अंगुलिमाल पड़ गया था। महात्मा बुद्ध जब अपने प्रवास में भवस्ती के जेतवनाराम में निवास कर रहे थे तो लोगों ने उनसे अंगुलिमाल के अत्याचारों और क्रूरता के बारे में बताया। महात्मा बुद्ध के मन में उस डाकू के प्रति करुणा जाग गई तथा उन्होंने उसका जीवन संवारने की मन में ठान ली। इसी आशय को लेकर वे उस बियावान जंगल की ओर चल पड़े जंहा अंगुलिमाल रहता था। जब लोगों ने उन्हें उस निर्जन वन की ओर जाते हुए देखा तो यह कहते हुए रोका कि भगवन् आप उस ओर मत जाइए, क्योंकि वहां पर अंगुलिमाल नाम का एक बहुत ही खूंखार हत्यारा रहता है। मगर महात्मा जी ने किसी की कुछ न सुनी और चुपचाप जंगल की ओर बढ़ते गए। अन्ततः वे उस निर्जन वन के उस स्थान पर पंहुच गए जहां यह डाकू रहता था। अंगुलिमाल ने जब बुद्ध जी को देखा तो उनकी हत्या करने के लिए आगे बढ़ा; तथागत अब कुछ तेजी से आगे बढ़ने लगे। डाकू ने उनका पीछा किया मगर जब उन्हें किसी प्रकार भी पकड़ना कठिन हो गया तो उसने उंचे स्वर में कहा-'रुको।' महात्मा जी उसकी आवाज को सुनकर रुक गए और बोले, 'लो अंगुलिमाल मैं तो रुक गया मगर अब तुम भी पाप कर्म करने से रुक जाओ। मैं इसीलिए यहां तक आया हूं कि तुम सतपथ पर चलकर अपने जीवन का कल्याण करो। तेरे अन्दर का 'कुशल' अभी मरा नहीं है। यदि तू इसे एक अवसर देगा तो यह तुम्हारी काया पलट देगा।'

तपस्वी महात्मा जी की वाणी में पता नहीं क्या जादू था कि अंगुलिमाल मन ही मन एकदम पिघल गया। वह बोला 'अब, जब आपकी दिव्य वाणी मुझे हमेशा के लिए पाप-विरत होने को कह रही है तो मैं इस अनुशासन को स्वीकारने के लिए तैयार हूं।' इतना कहकर उसने अपने गले में डाली अंगुलियों की माला उतारकर दूर फैंक दी और बुद्ध के चरणों में गिरकर दीक्षा देने की याचना की। तथागत ने करुणामयी वाणी से कहा-'भिक्षु, आ।' और अंगुलिमाल उसी क्षण से भिक्षु बनकर तथागत के साथ हो लिया। जिस अंगुलिमाल को राजा के सिपाही नहीं पकड़ सके वह अन्ततः एक सन्त की पकड़ में आ गया। लोगों को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ और एक दिन भिक्षु बने उस अंगुलिमाल पर एक व्यक्ति ने डण्डा फैंककर मारा, दूसरे ने ढेला मारा, तीसरे ने एक ठीकरा मारा जिससे भिक्षु के सिर से खून बहने लगा। भिक्षा पात्र टूट गया। वस्त्र फट गए। ऐसी ही अवस्था में भिक्षु तथागत

क्रमशः पृष्ठ 14 पर......

आर्यजगत् के देदीप्यमान नक्षत्र—महात्मा हंसराज

❑ आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, प्रधान सम्पादक 'अध्यात्मपथ'

आर्यजगत् के देदीप्यमान नक्षत्र, महान् ईश्वरभक्त, त्यागी, तपस्वी, कर्मयोगी, समाज सुधारक, ऋषिभक्त, डी.ए.वी. के सर्जक, महान् शिक्षाविद् महात्मा हंसराज जी स्थितप्रज्ञ महापुरुष थे।

भवति दिवस-वृत्तिः सप्तसप्तिः स्तथोष्ठाः,
सतत-कलुष-मध्यो दीव्यन्तीन्दुः क्षपायाम्।
समजनि समवृत्तिः सर्वथा यो अकलंको,
जयतु स मुनि-नम्यो हंसराजो महात्मा॥

सूर्य केवल दिन में प्रकाश करता है तथा स्वभाव से उष्ण भी है, चन्द्रमा सकलंक है और रात में प्रकाशित होता है, परन्तु मुनियों द्वारा भी नमनीय महात्मा हंसराज सदा एकरस तथा निष्कलंक थे, अर्थात् सूर्य-चन्द्र से भी श्रेष्ठ थे, अतः उनकी जय हो।

वे एक ऐसे कमल थे जो स्वगुण श्रवण की रात्रि में संकुचित हो जाते थे और परगुण कथन के दिवस में विस्तृत। एक बार की बात है कि किसी ने महात्मा हंसराज जी को कहा कि अमुक आदमी ने पाप से खूब पैसा कमाया है, इस पर महात्मा जी कहने लगे—मैं उनके जीवन के विषय में कुछ नहीं जानता, परन्तु इतना तो अवश्य पता है कि उस व्यक्ति ने कालिज के लिए 2500 रुपया दान दिया है। किसी व्यक्ति के क्रोध पर जब बात चली तब महात्मा हंसराज जी कहने लगे कि वह व्यक्ति बहुत उत्साही है, कठिनाई को कठिनाई नहीं समझता। क्योंकि कठिनाई को कठिनाई समझना ही बहुत बड़ी कठिनाई है। वे किसी की कभी भी निन्दा नहीं करते थे, अपितु दूसरों के गुणों की प्रशंसा करने में थकते नहीं थे। वे एक सच्चे सन्त पुरुष थे। महात्मा हंसराज के पुत्र बलराज पर सन् 1611 में लार्ड हार्डिंग पर बम फैंकने के षड्यन्त्र में शामिल होने के आरोप में मुकदमा चला और अन्त में काले पानी की सजा हुई। जिस दिन अदालत में निर्णय सुनाया जाना था उसी दिन महात्मा जी को जालन्धर में आर्यसमाज के उत्सव पर जाना था। महात्मा जी अदालत में गए, फैसला सुना और वहाँ से सीधा स्टेशन पहुँचकर जालन्धर रवाना हो गए। जालन्धर में उन्होंने किसी से उस सजा की चर्चा तक नहीं की, सारा आर्यजगत् इस अभियोग के परिणाम की बड़ी उत्सुकता और चिन्ता से प्रतीक्षा कर रहा था। अगले दिन लोगों ने जब अखबारों में क्रान्तिकारी बलराज को काले पानी की सजा का समाचार पढ़ा, तब सभी हतप्रभ रह गए। हतप्रभ केवल सजा की भयंकरता पर नहीं बल्कि महात्मा जी की अद्भुत स्थितप्रज्ञता पर भी। धन्य हैं त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी। महात्मा हंसराज आर्यसमाज के प्रमुख आर्यनेता एवं महान् समाजसेवी थे। केवल 22 वर्ष की आयु में ही डी.ए.वी. स्कूल लाहौर के प्रधानाचार्य बने। महात्मा हंसराज जी पर निम्नलिखित पंक्तियाँ चरितार्थ होती हैं–

अपने दुःख में रोने वाले मुस्कुराना सीख ले,
दूसरों के दर्द में आँसू बहाना सीख ले।
जो खिलाने में मजा है आप खाने में नहीं,
जिन्दगी में तू किसी के काम आना सीख ले।
वीर कर वो काम जिससे तू सदा जिन्दा रहे,
हर किसी को प्यार से अपना बनाना सीख ले॥

महात्मा हंसराज जी का कथन है कि प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है कि वह अपने नगर, कस्बा, ग्राम तथा कुल में एक बढ़िया उदाहरण बने और वेदों के प्रकाश को सामने रखे जो सहस्रों वर्षों के पश्चात् स्वामी दयानन्द ने पुनः प्रसारित किया है। यदि हमारे कर्म ऊँचे होंगे तो हम मुक्ति पायेंगे, अन्यथा नहीं। आर्यसमाज की सदस्यता हमें मुक्ति नहीं दिलाएगी। मुक्ति तो हमारे शुभ कर्मों तथा पवित्र आचरण पर निर्भर है। कर्म भी एक यज्ञ है।

महात्मा जी कहा करते थे कि कोई जाति (समाज) अच्छी अवस्था में नहीं रह सकती, जिसके अन्दर सद्भाव न हों। सद्भावों का संचार जातीय उन्नति के लिए प्रथम बात है। कितनी गहरी बात है। उठता है विचार तो उठता है आदमी, गिरता है विचार तो गिरता है आदमी। मेरा मानना है कि आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है मनुष्य की चेतना को जगाना। याद रखें आज तक जो कुछ भी समाज में श्रेष्ठ आया है वह सद्विचारों से ही आया है। विचारों की ऊँचाइयों से आया है। आपके भीतर किसी दीन-हीन दुःखियों, गरीब या मरीज की सेवा करने का भाव यदि आता है तो वह भी किसी विचार बीज के पैदा होने से ही आता है। वेद का संदेश है–आनो भद्राः क्रतयो यन्तु।

हो कर्म नेक तो दुनिया में इंसान अच्छा है।
समय जो प्रभु याद में गुजरे, तो वह वक्त अच्छा है।

हक के जुड़ जाये अगर दिल की तार, तो दिल अच्छा है।
अगर साफ कर ले तू दिल को, तो यही घर स्वर्ग से अच्छा है।

महात्मा हंसराज जी महान् कर्मयोगी थे। समाजसेवा, साहित्य सृजन, अध्यापन, लोकमंगल में सदा संलग्न थे। मेरा मानना है कि सच का सामना हमें सामने आकर करना चाहिए, पीछे से नहीं। सच वह दर्पण है जो अपना चेहरा हमें दिखाता है और वह हमारा भी चेहरा ही देखना चाहता है, पीठ नहीं।

जीवन की अवधि का पता नहीं होता, पर हमें करने के लिए जो काम मिला है, उसका हमें पता होना चाहिए। उसे हमने पूरा करना है। जीवन काल में यदि पूरा न भी हो तो भी संतोष होना ही चाहिए कि हमने श्रम और लगन में कोई कसर नहीं छोड़ी। चुनौतियों का सामना उनसे भागकर नहीं, जागकर करना चाहिए। महात्मा हंसराज जी के जीवन में अनेक कष्ट आये, विपत्तियाँ आई परन्तु वे विचलित नहीं हुए। हमें भी चाहिए कि उनके जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ें। सन्ध्या, सेवा, स्वाध्याय, संस्कार, सत्संग, सत्य को आत्मसात् करें। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के देहावसान के बाद महात्मा हंसराज जी ने सोचा कि आर्यसमाज की विचारधारा से पूर्ण युवक ही ऋषि के कार्य व स्वप्न को पूरा कर सकता है। उन्होंने ऋषि के कार्य को पूरा करने के लिए डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना की। वेदप्रचार मण्डल द्वारा वेदों का प्रचार किया एवं यज्ञ, समाज-सुधार के कार्यों द्वारा आर्यसमाज फला-फूला। आज फिर ऐसे महापुरुषों की आवश्यकता है जो समाज के लिए महात्मा हंसराज की तरह तन-मन और धन अर्पण कर सके। आइए महात्मा हंसराज जी के बताए हुए मार्ग पर चलते हुए अज्ञान, अन्याय, अभाव को दूर करने के लिए कटिबद्ध हों।

इक न इक शम्मा, अंधेरे में जलाये रखिये।
सुबह होने को है, माहौल बनाये रखिये॥

जपत जपत नित्यं मन्त्रवत् तस्य नाम
पठत पठत पुण्यं भ्रातरस्तच्चरित्रम्।
भवत भवत योग्यास्तस्य शिष्यत्वमाप्तुम्।
जयतु भुवि यथाऽसौ हंसराजो महात्मा॥

उस आत्मा के गुणों को धारण करो, उसके चरित्र को बार-बार पढ़ो और करो प्रयास उसके नामलेवा बने रहने की पात्रता प्राप्त करने के लिए जिससे वह महापुरुष संसार में जयी हो-उसका नाम अमर रहे।

संपर्क-फ्लैट नं० सी-1, पूर्ति अपार्टमेंट (एफ-ब्लॉक) विकासपुरी, नई दिल्ली-110018, मो० 9810048806

महान् योद्धा महाराणा प्रताप

❑ डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

भारत के इतिहास में राजस्थान का नाम बड़े गौरव से लिया जाता है। राजस्थान के प्रत्येक ग्राम, नगर व क्षेत्र में वीरतापूर्ण गौरवगाथाएं वहां की वीरता, शौर्य एवं साहस पूर्ण इतिहास की शोभा बढ़ा रही है, जिसमें मेवाड़ का अपना स्थान है और जब मेवाड़ का नाम आता है तब वहां मेवाड़ केसरी शूरवीर, स्वाभिमानी, स्वतन्त्रता के पुजारी, देशभक्त सूर्य की भांति तेजयुक्त विशाल हृदययुक्त एक महान् योद्ध महाराणा प्रताप का नाम स्मरण हो जाता है। वही प्रताप-जिनका स्वामिभक्त घोड़ा चेतक बागडोर के हिलते ही लेकर उड़ जाता था।

महाराणा प्रताप का जन्म चित्तौड़ दुर्ग में रविवार ज्येष्ठ सुदी 3 विक्रम विक्रम संवत् 1597 (तदनुसार 9 मई, सन् 1540 ईस्वी) को हुआ। इनकी माता रानी जैवन्ती देवी व पिता राणा उदयसिंह थे। इनके पूर्वज वप्पा रावल राणा सांगा (राणा संग्राम सिंह) आदि ने अपना पूरा जीवन विदेशी लुटेरों, अत्याचारी मुगल तुर्क अफगानों से लड़ाई में न्यौछावर कर दिया। इनके पूर्वज अत्यन्त देशभक्त, शूरवीर, प्रजावत्सल व कुशल योद्धा थे। मातृभूमि की रक्षा हेतु उन्होंने हँसते-हँसते प्राण दे दिए। महाराणा प्रताप भी हिन्दू व हिन्दुस्तान के सूर्य थे। उनका नाम वीर शिरोमणियों में अत्यन्त श्रद्धा से लिया जाता है। स्वाभिमानी व स्वतन्त्रता के पुजारी थे। राष्ट्र व प्रजा की रक्षा के लिए सदैव प्रहरी की भांति खड़े रहते थे।

मेवाड़ के सरदारों ने प्रताप को अपनी विराट् सभा करके राजगद्दी संभालने का निवेदन किया था उन्हें उनके पूर्वजों की शौर्य की गाथा याद दिलाई। पन्नाधाय के पुत्र चन्दन का बलिदान याद दिलाया कि कैसे क्रूर शासक बनवीर से उदयसिंह की रक्षा की थी। राणा सांगा के शत्रु के साथ भीषण युद्ध की याद दिलाई। कैसे सांगा ने छियासी बड़े घावों में एक नेत्र चला जाने पर भी लड़ते रहे थे। रानी करुणावती का वह स्वप्न जो वह चाहती थी कि मुगलों से भारत को स्वतन्त्र कराना है। सरदारों ने कहा कि चित्तौड़

श्मशान की भांति हो गया है, न धन है न सेना। अब यह कांटों का मुकुट आपको पहनाना होगा। चित्तौड़ आज चारों ओर से शत्रुओं से घिरा हुआ है। जनता आपको याद कर रही है। राजगद्दी को संभालो यह जनता की पुकार है प्रताप।

प्रताप ने 28 फरवरी सन् 1562 को होली के दिन गोगुन्दा में राजगद्दी संभाली थी। ऐसे में माता जैवन्ती ने शपथ दिलाई कि जब तक भारत भूमि को मुगलों से स्वतन्त्र नहीं करा लोगे तब तक सोने-चांदी के बर्तनों में भोजन नहीं करोगे। भूमि पर ही शयन करोगे और इस माता के वचन को प्रताप ने आजीवन निभाया इस पर प्रताप ने भी अपनी माता को कहा था-

खाऊँ न परतन्त्र होकर, सोने की थालियों में।
भले हैं स्वतन्त्रता के, दोना पात ढाक के॥
सहित हुलास वृक्ष तले का निवास भला।
महल न चाहूँ लगे दासता पताक के॥
विप्र घनश्याम रिद्धि-सिद्धि भरे राजसाज।
कौन चाहता है, दिल्ली पत बरबराक के॥
चाहता नहीं हूँ स्वर्गलोक की बादशाही।
बदले में मातृभूमि के मुट्ठी भर राख के॥
खाऊँ न परतन्त्र होकर, सोने की थालियों में।
भले हैं स्वतन्त्रता के, दोना पात ढाक के॥

राजस्थान के सभी राजाओं ने लगभग अकबर के दरबार में शरण ले ली थी। बड़े-बड़े पद उन्हें मिले। बड़ी-बड़ी सुख-सुविधायें मिली। परन्तु एक वीर महाराणा प्रताप ऐसा था जो मुगलों के आगे नहीं झुका।

हल्दी घाटी का युद्ध 18 जून सन् 1576 को हुआ था। भीषण युद्ध था मैदान रक्त से लतपथ हो गया था। इस युद्ध में अकबर की ओर लड़ने वाले भी राजपूत योद्धा थे। मानसिंह अकबर की ओर से ही लड़ रहा था। महाराणा प्रताप की सेना में भी राजपूत, भील थे तथा हकीम खां शूरी जैसा बहादुर पठान था उसके साथ अन्य पठान भी थे। युद्ध की नीति अत्यन्त विकराल थी अन्त में राणा प्रताप लड़ते रहे, परन्तु उन्होंने हार नहीं मानी थी।

महाराणा प्रताप एक आदर्श शासक थे। राजा की श्रेष्ठता के लिए जो गुण होने चाहिएं वह प्रताप में थे। मुगलों से संघर्ष के समय पड़ोसी राज्यों से कूटनीतिक सम्बन्ध बनाए रखने हेतु कहते थे। वे प्रजा के दुःख-दर्द का स्वयं ध्यान देते थे। प्रजा भी उन्हें हृदय से अपना मानती थी। महिलाओं का पूरा सम्मान करते थे।

सन् 1580 में जब अब्दुर्रहीम खानखाना को अजमेर का गवर्नर बनाकर भेजा और मेवाड़ का अभियान भी खानखाना को भी सौंपा गया। ऐसे में खानखाना ने अपने परिवार को शेरपुर में सुरक्षित रखकर राणा पर आक्रमण कर दिया था। राणा ढोलाना की ओर चले गये थे तब इनके सुपुत्र कुंवर अमरसिंह ने शेरपुर पर आक्रमण कर मिर्जा अब्दुर्रहीम खानखाना के परिवार को बन्दी बना लिया था जब प्रताप को यह बात पता लगी तो उन्होंने अमर सिंह को आदेश दिया था कि मिर्जा के परिवार को सम्मान सहित व सुरक्षित मिर्जा के निवास पर पहुँचा दे। तब कुंवर अमरसिंह ने परिवार को ससम्मान मिर्जा के घर पर छोड़ा। ऐसे थे महाराणा प्रताप। मर्यादाओं की रक्षा करना उनके रक्त में था।

माघ सुदी 11 विक्रम संवत् 1654 (19 जनवरी सन् 1597) को भारत की आन-बान व शान की रक्षा करने वाले वीर सपूत की मृत्यु हो गई। उनका जीवन चरित्र सदैव अनुकरणीय रहेगा। प्रताप ऊँचे चरित्र, स्वाभिमान, राष्ट्र व समाज हेतु त्याग के लिए, शौर्य के लिए एक आदर्श थे।

महाराणा प्रताप का नाम अटूट देश-प्रेम, स्वाधीनता व बलिदान हेतु सदैव सम्मान के साथ लिया जाता रहेगा। वह हम सभी भारतीयों के लिए प्रेरणास्रोत है, अनुकरणीय है।

महाराणा प्रताप के साथ पन्नाधाय जिसने अपने पुत्र चन्दन का बलिदान देकर प्रताप के पिता राणा उदयसिंह के जीवन की उस हत्यारे क्रूर बनवीर की खूनी तलवार से रक्षा की थी ऐसी महान् नारियां भारत भूमि पर हमारी पीढ़ियों के लिए बलिदान व आदर्श के लिए सदैव स्मरण की जायेंगी। उस वीर नारी पन्नाधाय के लिए कहा है-

होती न पन्ना हिन्दवाणां में, पालत सो राणा हुतो कोनी।
होनी नह हल्दी घाटी, भी राजपूती ख्याल हुतो कोनी।
इतिहास अधूरो रह जातो, सगलां पर पाणी फिर जातो।
अकबरशाही बादलियो, हिन्दवाणे ऊपर छा जातो।

(राजस्थानी कविता)

आर्यो ! वैदिक धर्म का पालन करो

❑ पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक

जिस समय महर्षि दयानन्द सरस्वती संसार में आए थे उस समय संसार की भारी दुर्दशा थी। नर-नारी धर्म-कर्म, वेद-पठन-पाठन, सन्ध्या-हवन, पुण्य-दान, जप-तप भूल

चुके थे। यज्ञों में नरबलि, पशुबलि, पक्षी बलि दी जाती थी। स्त्रियों और शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था। बालविवाह, अनमेल विवाह होते थे और कहीं सदाचार, ब्रह्मचर्य की शिक्षा नहीं दी जाती थी। उस समय लाखों बालविधवाएं रोती थीं जिनमें से हजारों विधर्मी, ईसाई, मुसलमानों के घरों को बसा रही थीं। अर्थात् सर्वत्र हाहाकार मचा हुआ था।

नर-नारी कर्म प्रधानता का वैदिक सिद्धान्त त्याग कर जन्मजाति को बढ़ावा दे रहे थे। वेदों के स्थान पर पुराणों की कथा होती थी। सेवा करने वाले गरीब-कमजोर व्यक्तियों को नीच समझकर ठुकराया जाता था। इसी का परिणाम था रोजाना राम, कृष्ण के वंशज हजारों की संख्या में ईसाई, मुसलमान बन रहे थे। उस समय विदेश यात्रा करना महापाप समझा जाता था। विधर्मी लोग हमें असभ्य-जंगली, महामूर्ख बताते थे। ईसाई पादरी वेदों को गडरियों के गीत बताते थे। भारतीयों में पाखण्डी लोगों ने यह धारणा बिठा दी थी कि वेदों को शंखासुर नाम का राक्षस पाताल लेकर चला गया है। अर्थात् वेद इस संसार में नहीं हैं।

उस समय धर्म की हालत आटे के दीपक की तरह थी जिसे घर के अन्दर रख दें तो चूहे खा जाएं और यदि बाहर रख दें तो कौए लेकर उड़ जाएं। उस समय भंगी-चमार के छूने पर, तेली के आगे आ जाने पर धर्म नष्ट होना माना जाता था। भारत के राजा लोग अज्ञानतावश आपस में लड़ते रहते थे। विदेशी अंग्रेजी शासक हमारी फूट का भरपूर लाभ उठा रहे थे। उस समय वैदिक सभ्यता, संस्कृति, गौ, ब्राह्मणों का कोई रक्षक नहीं था, अपितु सभी भक्षक बने हुए थे। ऐसे भयानक समय महर्षि देवदयानन्द का इस देवभूमि में प्रादुर्भाव हुआ था। स्वामी जी ने संसार के भले के लिए अपने भरे पूरे परिवार का छोड़ा और जीवन के सभी सुखों को त्यागकर मानवता की सेवा करने का बीड़ा उठाया। महर्षि दयानन्द ने स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास की दीक्षा ली और योग सीखा। मथुरा में वेदों के प्रकाण्ड पण्डित स्वामी विरजानन्द सरस्वती के पास जाकर उनकी सेवा की और वैदिक ज्ञान प्राप्त किया। शिक्षा पूर्ण होने पर दक्षिणा के रूप में गुरुदेव को संसार में वेदज्ञान का प्रचार करने का वचन दिया, जिसे जीवन भर निभाया।

स्वामी जी ने भारत में घूम-घूमकर वेदप्रचार किया और नर-नारियों को कर्म प्रधानता का महत्त्व समझाया। उन्होंने ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, अजन्मा, अनादि, अजर, अमर, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता बताया। मूर्तिपूजा को अज्ञानता का मूल बताकर मूर्तिपूजा से होने वाली हानियों का बोध कराया। उन्होंने नारी जाति और गऊ माता को पूज्य बताया तथा स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया। स्वामी जी ने सबसे पहले स्वराज्य का मंत्र भारतवासियों को दिया और विदेशी राज्य महादु:खदायी बताया। उन्होंने भारत के सभी राजाओं को मिलकर चलने और अपना एक नेता बनाने के लिए प्रेरित किया। सन् 1857 ई० का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम महर्षि दयानन्द महाराज के प्रयासों का ही सुफल था। स्वामी जी ने राव युधिष्ठिर से मिलकर सर्वप्रथम रेवाड़ी (हरयाणा) में गोशाला की स्थापना कराई। स्वामी जी यह अच्छी तरह जानते थे कि गौ जैसा उपकारी पशु संसार में कोई नहीं है, इसलिए उन्होंने गोकरुणानिधि पुस्तक की रचना करके गोसेवा को परमधर्म बताया। स्वामी जी ने भारत के सभी मतों को मानने वाले विद्वानों को समझाया कि अगर तुम संसार का भला चाहते हो तो एक ईश्वर, एक धर्म, एक ग्रंथ, एक अभिवादन मानकर वेदज्ञान का प्रचार करो। बड़े दु:ख के साथ लिखना पड़ता है उन स्वार्थी, दम्भी लोगों ने स्वामी जी की सलाह नहीं मानी। स्वार्थी पाखण्डी लोगों ने उन पर गोबर फेंका, पत्थर बरसाए एवं उन्हें सत्रह बार विषपान कराया। किन्तु वे अपने धर्मपथ से विचलित नहीं हुए। अगर स्वामी दयानन्द इस धरती पर नहीं आते तो आज कोई भी वेदशास्त्रों की

चर्चा करने वाला, राम, कृष्ण आदि महापुरुषों और ऋषियों-मुनियों का नाम लेने वाला दुनिया में नजर नहीं आता। वास्तव में उन जैसा त्यागी-तपस्वी, वीर, साहसी, ईश्वर-विश्वासी, वेदों का विद्वान् महाभारत काल के बाद कोई दूसरा व्यक्ति इस संसार में नहीं हुआ। वे वस्तुतः सच्चे युगनायक संन्यासी थे। उनका ऋण हम कभी नहीं चुका सकते। आर्यो! बड़े खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि महर्षि दयानन्द जी ने हमारे भले के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया था। किन्तु हम उनकी शिक्षाओं पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे हैं। महर्षि ने प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन पंच यज्ञ करने की शिक्षा दी थी। किन्तु हम पंचयज्ञों का करना-कराना भूल चुके हैं। अब तो यह स्थिति आर्यसमाज के भवनों में संन्यासी, विद्वानों, उपदेशकों को भी नहीं ठहरने दिया जाता। शहरों में आर्यसमाज के भवनों में बरात घर बना दिये गये हैं और बनाए जा रहे हैं। बारात घरों में आए दिन बारातियों द्वारा हुड़दंग मचाने एवं शराबबाजी करने की खबरें समाचार पत्रों में छपती रहती हैं। महर्षि दयानन्द ने कर्णवास के राजा राव कर्मसिंह को रासलीला के नाम पर महापुरुषों का स्वांग भरने पर फटकार लगाई थी किन्तु आज आर्यसमाज के उत्सवों में बाल-बालिकाओं को महापुरुषों के स्वांग भरने की खुली छूट दी जाने लगी है जो शर्म की बात है। स्वामी जी ने सहशिक्षा को घातक बताया था किन्तु अब आर्यसमाज के विद्यालयों में सहशिक्षा दी जाती है। आर्यसमाजों और सभाओं में पदों और सम्पत्तियों के ऊपर मुकदमेबाजी हो रही है जिससे आर्यसमाज की प्रतिष्ठा मिट रही है। यह हमारे लिए शर्म की बात है।

इस समय संसार में हजारों व्यक्ति वेद के विरुद्ध मत-मतान्तर चलाकर, ईश्वर की पूजा छुड़वाकर गुरुडम एवं पाखण्ड फैला रहे हैं, जिनमें से सैकड़ों पाखण्डी जेलों में बन्द हैं। इस समय चरित्र हीनता, भ्रष्टाचार बढ़ रहे हैं, जिससे सारा संसार दुःखी है। अगर महर्षि दयानन्द को यह ज्ञात होता कि हम इतने स्वार्थी प्रमादी लोभी बन जायेंगे तो वे कदापि विषपान नहीं करते। पं० लेखराम ने कहा था-लेखनी का कार्य और शास्त्रार्थ बन्द नहीं होने चाहिएं। स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा था-शुद्धि का कार्य कभी भी बन्द नहीं होना चाहिए। आप ठण्डे दिल से विचार करें कि क्या हम उनकी बात मान रहे हैं? जो अपने आगे किसी को भी कुछ नहीं समझते। याद रखो यह धन यहीं पड़ा रह जाएगा। इस संसार में जो व्यक्ति निःस्वार्थ भावना से परोपकार एवं संसार की भलाई के काम करते हैं यह संसार उन्हीं की महिमा के गीत गाता है। अगर आप भी महान् बनना चाहते हैं और महर्षि दयानन्द महाराज के सच्चे शिष्य बनने का दम भरते हैं तो वेदप्रचार के लिए अच्छी तरह कमर कसकर कर्मक्षेत्र में कूद पड़ो। अन्त में-

आर्यकुमारो! अब तो जागो, आगे कदम बढ़ाओ तुम।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ तुम॥
देश, धर्म के काम जो आये, उसे जवानी कहते हैं।
सारा जग खुश होकर गाये, उसे कहानी कहते हैं॥
जगत्गुरु ऋषि दयानन्द के, सपनों को साकार करो।
करो परस्पर प्रेम सज्जनों, वेदों का प्रचार करो॥
स्वामी श्रद्धानन्द बनो तुम, जग में नाम कमाओ तुम।
अगर नहीं जागोगे मित्रो! भारी दुःख उठाओगे।
हँसी उड़ायेगी फिर दुनिया, अज्ञानी कहलाओगे॥

संपर्क-आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

आर्य वीरांगना स्वरक्षा तथा चरित्र निर्माण शिविर

वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर रोहतक में दिनांक 4 जून से 11 जून 2018 तक आर्य वीर दल रोहतक मण्डल की ओर से ग्रीष्मावकाश में आर्य वीरांगना प्रशिक्षण शिविर लगाया जायेगा जिसमें कक्षा 6 से 12 तक की बेटियां भाग ले सकेंगी। आत्मरक्षा, लाठी, जुडो-कराटे, आसन, प्राणायाम, रस्साकूद, तलवार के अतिरिक्त सन्ध्या-यज्ञ एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष परीक्षण दिया जायेगा।

शिविर में सफेद सलवार कमीज, कान के माप की लाठी, नोटबुक, सफेद जुराब, जूते, थाली, गिलास, चम्मच एवं हल्का बिस्तर लाना अनिवार्य होगा।

शिविर का उद्घाटन 4 जून सायं 6 बजे तथा समापन 11 जून प्रातः 9 से 12 बजे तक होगा। समय-समय पर विद्वानों, योग्य प्रशिक्षकों द्वारा बौद्धिक ज्ञान दिया जाएगा। -देशराज आर्य, मण्डलपति

सम्पर्क सूत्र-9215212533, 9416211809, 9466749992

सत्संग से सब कुछ मिल...... पृष्ठ 8 का शेष.......

के पास पंहुचा तो भगवान बुद्ध ने कहा-'अंगुलिमाल यह सब सहन कर। हां अंगुलिमाल यह सब सहन कर।' इस प्रकार एक महात्मा की सत्संगति से एक खूंखार डाकू भी एक सन्त बन गया और आगे के जीवन में उसकी बहुत कीर्ति हुई।

कहते हैं कि पारसमणि के स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है। सचमुच सत्संग एक ऐसी ही पारसमणि है जिसके स्पर्श से पतित से पतित व्यक्ति भी महान बन जाता है। जिस प्रकार अग्नि के स्पर्श से कोयला भी चमक उठता है उसी प्रकार सत्संग से व्यक्ति का जीवन निखर जाता है। इसीलिए पंचतन्त्र में बड़ा ही सुन्दर कहा गया है-

महाजनस्य संसर्गः कस्य नोन्नतिकारकः।
पद्मपत्रस्थितं वारि धत्ते मुक्ताफलश्रियम्।।

बड़े महापुरुषों के संसर्ग से भला किसकी उन्नति नहीं होती! अर्थात् सबकी उन्नति होती है, जैसे कमल के पत्र पर गिरी हुई बून्द मुक्ताफल की सदृशता को धारण करती है। अतः मनुष्यों को अत्युचित है कि भोजन करने के सदृश सत्संग को भी अपना मुख्य कर्तव्य समझकर प्रतिदिन नियमपूर्वक उत्तम पुरुषों का सत्संग करना चाहिए ताकि मन की मलिनता निरन्तर धुलती रहे।

संपर्क-महादेव, तहसील सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि०प्र०) 175018 मो० 09418053092

प्रेरक वचन

- मनुष्य जन्म से नहीं, कर्म से महान् बनता है।
- धैर्य कड़वा है, लेकिन इसका फल मीठा है।
- मौन विपत्ति से बचने का साधन है।
- चिन्ता अक्सर एक छोटी चीज को बड़ी छाया दे देती है।

- लम्बी सीढ़ी एक-एक पायदान करके चढ़ी जाती है।
- जोखिम लिए बिना कभी कोई महान् चीज संभव नहीं हुई।
- महत्त्वाकांक्षा के साथ मेहनत भी हो तो मंजिल मिलती ही है।
- सफलता चाहते हैं तो समय के साथ सुधार करते रहिए।
- ज्ञान शक्ति है और उत्साह उसका स्विच है।
- हम जितना विनम्रता से झुकते हैं, उतना ही ऊपर उठते हैं।

संकलनकर्त्ता–भलेराम आर्य, गांव सांघी (रोहतक)

उड़ियो पंख पसार...... पृष्ठ 4 का शेष.......

सब कुछ निःशुल्क प्राप्त हो जाये। अरे भाई! श्रम स्वयं करना होगा। साधना और ध्यान स्वयं करना होगा। अपने पंख स्वयं उड़ाने होंगे, फड़फड़ाने होंगे। पर यह क्या? तुमने कई जन्मों से इन्हें हिलाया ही नहीं। ये तुम्हारे पंख तुम्हारे पास तो हैं, परन्तु उड़ना भूल गए हैं।

प्रायः यह होता है कि जो पक्षी बहुत दिनों तक पिंजड़े में बन्द रह गया, कुछ दिनों के पश्चात् वह पिंजड़े से बाहर निकालो तो वह उड़ न सकेगा। वह भूल ही जाता है कि पंख उसके पास है। यदि उड़ने का प्रयास भी करता है तो सम्भवतः गिर जाता है, फड़फड़ाकर गिर जाता है। प्रायः ज़ो तोते पर्याप्त समय तक पिंजड़ो में बन्द रहते हैं, छोड़ दिये जाने पर या तो शीघ्र ही मृत्यु का शिकार हो जाते हैं या कोई बिल्ली उन्हें खा जाती है, या चील झपट्टा मार देती है। वे अपने को सुरक्षित नहीं रख सकते। वे भूल जाते हैं कि उनके पास पंख भी है। विस्मरण का बड़ा पर्दा उनके बीच में आ जाता है। यदि खोल सको पंख अपने, उड़ सको अपने स्वभाव में, उड़ सको अपने स्वरूप में, तो हो जाओगे दु:ख के पार, हो जाओगे इस शरीर के सरोवर से पार। यह भवसागर पार हो जाएगा। ये हमारे बहुमूल्य वचन हैं।

मैं तुम्हें अर्थ समझा दूँगा, परन्तु मेरा अर्थ मेरा अनुभव होगा। तुम सुन लोगे, शब्द तुम्हारे कान तक पहुँच जायेंगे। परन्तु पंख तो तुम्हें अपने ही खोलने होंगे। तुम्हें यात्रा तो अपनी ही करनी पड़ेगी। मैं संकेत दे सकता हूँ, इंगित कर सकता हूँ, कैसे पंख फड़फड़ाओगे, कैसे पहला पग आगे बढ़ाओगे, यह सब सूचनाएं तुम्हें दी जा सकती हैं परन्तु यात्रा तो तुम्हें स्वयं ही करनी पड़ेगी। कोई दूसरा तुम्हारे लिए यात्रा नहीं कर सकता। प्रत्येक व्यक्ति को परमात्मा तक स्वयं ही चलकर पहुँचना होता है, यह यात्रा उधार नहीं हो सकती।

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	वेदप्रचार मण्डल (पलवल)	1 से 31 मई 2018
2.	वेदप्रचार मण्डल (रेवाड़ी)	11 से 20 मई 2018
3.	आर्यसमाज जाड़रा (रेवाड़ी)	2 से 3 जून 2018
4.	आर्यसमाज बिसोहा (रेवाड़ी)	9 से 10 जून 2018

–रमेश आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

समाचार-प्रभाग

राजभवन एवं आर्यसमाज शिलांग का किया दौरा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान मा० रामपाल आर्य, मन्त्री श्री उमेद सिंह शर्मा एवं श्री नरेन्द्र सिंह कटारिया एडवोकेट ने राजभवन शिलांग एवं आर्यसमाज मन्दिर शिलांग का दौरा किया। राजभवन शिलांग पहुँचने पर महामहिम राज्यपाल मेघालय श्री गंगाप्रसाद जी ने सभा अधिकारियों के साथ नाश्ता किया और आर्यसमाज के उत्थान एवं वेदप्रचार पर लम्बी वार्ता की। महामहिम राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद जी ने सभा अधिकारियों से हरियाणा प्रदेश के आर्यसमाजों के विषय में काफी चर्चा की। महामहिम राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि पधारे थे, वे सभा की गतिविधियों से बहुत प्रभावित हुए थे। महामहिम राज्यपाल मेघालय श्री गंगाप्रसाद जी इससे पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के पूर्व प्रधान एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के अन्तरंग सदस्य हैं, उन्होंने आर्यसमाज के बारे में विस्तृत चर्चा की।

इसके बाद आर्यसमाज मन्दिर शिलांग पहुँचने पर आर्यसमाज के अधिकारियों ने सभा अधिकारियों को पुस्तकें भेंट करके उनका सम्मान किया, जिनमें 'दिव्यामृत-सत्संग पुस्तिका', 'उपासना पथ' और 'प्रयाण-सत्य उपदेश' तीन पुस्तकें भेंट कीं। यह यात्रा सभा अधिकारियों के लिए काफी प्रेरणाप्रद रही।

–सत्यवान आर्य, सभा कार्यालय, रोहतक

साधना शिविर एवं बृहद् यज्ञोपदेश सम्पन्न

दिनांक 30 व 31 मार्च 2018 को कृष्णा वैंकट हॉल दिल्ली मार्ग रोहतक में आर्य युवा क्लब द्वारा साधना शिविर का आयोजन हुआ। आर्यजगत् के वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी, देवर्षि विद्यापीठ के सान्निध्य में योगासन, प्राणायाम व ध्यान का अभ्यास कराया गया। आचार्य वेदमित्र जी ने परमानन्द प्राप्ति का सुअवसर मानव जीवन को बतलाया। इसी प्रकार 8 अप्रैल 2018 को सैक्टर-7 गुरुग्राम में बृहद्यज्ञ व वेदोपदेश कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आचार्य जी के सान्निध्य में श्री अतुल आर्य B.tech. Engr. द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ। आचार्य जी ने कहा कि गर्भ में बालक पर यज्ञ का संस्कार पड़ता है। चौथे या छठे महीने ऋषि दयानन्द ने माँ द्वारा गीत गाने का विधान मस्तिष्क की सक्रियता हेतु प्रावधान किया जो आज के वैज्ञानिक भी इसकी पुष्टि कर रहे हैं। कार्यक्रम के उपरान्त ऋषिलंगर की व्यवस्था की गई।

स्वस्तियाग एवं वैदिक सत्संग सम्पन्न

राजौरी गार्डन नई दिल्ली में सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में स्वस्तियाग का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के मुख्य यजमान धर्मनिष्ठ श्रीमती सुरेखा चोपड़ा जी एवं आर्यसमाज नारायणा विहार नई दिल्ली के प्रधान श्री दर्शनलाल कत्याल जी थे। इस अवसर पर आचार्यश्री ने श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि यज्ञ समस्त भुवनों की, समस्त सत्ता की, समस्त जगत् की नाभि है। यज्ञ की शक्तियाँ अनन्त हैं। यह दीर्घायुष्य शतायुष्य प्रदान करने वाला है। अन्त में आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी द्वारा लिखित 'सुखी जीवन के सूत्र' नामक पुस्तक का नि:शुल्क वितरण किया गया।

1100 कुण्डीय विराट् यज्ञ में आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री सम्मानित

दुनिया के सबसे प्रदूषित शहर दिल्ली की वायु पर्यावरण शुद्धि एवं भारतीय नववर्ष के उपलक्ष्य में 5 हजार वर्षों के इतिहास में पहली बार जीव रक्षणि प्रीत फाउंडेशन एवं पतंजलि युवा भारत दिल्ली के तत्त्वावधान में रोहिणी दिल्ली में 1100 कुण्डीय विराट् यज्ञ का आयोजन धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को पीतवस्त्र एवं प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अन्त में विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया। समस्त आयोजकों को अध्यात्म पथ पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

शास्त्री जी ने वेदों का डंका बजाया

अध्यात्म पथ के यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विकासपुरी नई दिल्ली के राम मन्दिर में रामनवमी के पावन पर्व के अवसर पर विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन प्रेरक और आदर्श था। वे वेदप्रेमी, यज्ञप्रेमी धर्मपुरुष थे।

धर्म की समस्त विशेषताएं उनके चरित्र में थी। वे मर्यादाओं के पालक, रक्षक और संचालक थे। इन्हीं गुणों के कारण वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये। आचार्यश्री ने कहा कि राम की पितृभक्ति का अनुकरण आज प्रत्येक युवक के लिए परमावश्यक है। आचार्य जी ने वेदमंत्र की व्याख्या करते हुए कहा कि श्रीराम का जीवन वेदानुकूल था। यदि हम चाहते हैं कि रामराज्य द्वारा संसार पुनः स्वर्गधाम बने, विश्व में व्याप्त भ्रष्टाचार, अत्याचार एवं कदाचार के ताण्डव नृत्य का शीघ्र अन्त हो, तो हमें अपने जीवन में वेदों को अपनाना होगा तथा श्रीराम के गुण समाहित करने होंगे। इस शुभावसर पर श्री मुनीश्वर गुलाटी जी, श्रीमती कृष्णा गुलाटी जी एवं मन्दिर के पदाधिकारियों ने आचार्यश्री का माल्यार्पण कर सम्मान किया। अन्त में विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया।

—**डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया** (साहित्य संपादक-अध्यात्म पथ)

श्री सुभाष नागपाल जी दिवंगत

आर्यसमाज शिवाजी नगर गुरुग्राम के पूर्व सदस्य श्री सुभाषचन्द्र नागपाल जी 29.04.2018 रविवार प्रातःकाल 6.30 बजे हृदयगति के रुक जाने से स्वर्ग सिधार गये। वे अपने पीछे अपने सुपुत्र श्री सुधीर (रम्मी) नागपाल, सुपुत्री श्रीमती नीरू (मनोज) असीजा, सुपौत्र गर्व नागपाल, सुपौत्री कुमारी इशिता नागपाल छोड़कर गये हैं। उनकी पत्नी

का देहान्त 20 वर्ष पूर्व हो गया था। उनके निवास स्थान पर तीन दिवसीय 29.04.2018 से 01.05.2018 तक विशाल शान्ति यज्ञ का आयोजन श्री कन्हैयालाल आर्य उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के ब्रह्मत्व में हुआ। 02.05.2018 से शान्ति कथा प्रारम्भ हो गई है जो 08.05.2018 तक चली जिसमें पूरे परिवार एवं सम्बन्धियों को मृत्यु के उपरान्त वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी स्त्री आर्यसमाज शिवाजी नगर गुरुग्राम की मन्त्राणी श्रीमती चन्द्रावती आर्या एवं श्रीमती वेद मेहता द्वारा दी गई। परिवार ने श्री सुभाषचन्द्र नागपाल जी के मरणोपरान्त नेत्रदान किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के सभी सदस्य, कार्यकर्त्ता एवं अधिकारीगण श्री सुभाषचन्द्र नागपाल जी के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करते हैं। परमपिता परमात्मा से करबद्ध प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और उनके परिवार तथा सम्बन्धियों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति मिले।

—मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

नामकरण संस्कार सम्पन्न

दिनांक 29 अप्रैल, 2018 को श्रीमती अनीता एवं श्री वीरेन्द्र छिक्कारा की नवजात सुपौत्री एवं श्री सुधीर आर्य सुपुत्री का नामकरण संस्कार सैक्टर-2-3 रोहतक में वैदिक विद्वान् डॉ. जगदेव सिंह, श्री सुभाष आर्य, श्री रघुवीर सिंह मान द्वारा वैदिक यज्ञ करके सम्पन्न किया गया जिसमें अनेक आर्यजनों ने भाग लिया तथा बड़ी प्रसन्नता से यज्ञ में आहुति डालकर धर्मलाभ उठाया। डॉ. जगदेवसिंह ने इस अवसर पर संस्कारों पर बोलते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मनुष्य के जीवन के कल्याण के लिए सोलह संस्कारों को करना आवश्यक बताया अन्यथा व्यक्ति कितना ही शिक्षा, धन-वैभव प्राप्त कर ले आचरण में वह पूर्ण मनुष्य नहीं बन पाता और कहीं न कहीं जीवन में भटकता ही रहता है। श्री सुभाष आर्य ने बताया कि अगर हम अपने जीवन को प्रकाशवान, ज्ञानवान और विचारों को उज्ज्वल बनाना चाहते हैं तो हमारे महान् पूर्वजों द्वारा बताए वैदिक मार्ग को अपनाना पड़ेगा नहीं तो अनेक दुःखों, अत्याचारों को सहन करना होगा। यज्ञ पर उपस्थित सभी ने बड़े ध्यान व उत्साह से इन बातों को सुना।

शोक-सन्देश

मा० नोबतसिंह आर्य संरक्षक आर्यसमाज सिहोर जिला महेन्द्रगढ़ के छोटे भाई वेदप्रकाश आर्य का असामयिक निधन हो गया है। वेदप्रकाश जी हरयाणा पुलिस (P.T.I.) का चिकित्सा के दौरान पार्क हस्पताल गुरुग्राम में दिनांक 20.03.2018 को असामयिक निधन हो गया। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गए हैं। उनकीतीन लड़कियाँ आर्य गुरुकुल जसात (रेवाड़ी) की स्नातिका हैं। दो लड़के भारतीय सेना में कार्यरत हैं। इनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से महात्मा जीवानन्द 'नैष्ठिक' द्वारा कराया गया। इनकी श्रद्धांजलि सभा दिनांक 27.03.2018 (एकादशी) ग्राम सिहोर में महात्मा जीवानन्द 'नैष्ठिक' व इन्द्रलाल जी प्रधान वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ व आसपास के आर्यों की उपस्थिति में की गई।

—दलीप आर्य, पूर्व सेवानिवृत सैनिक,
कोषाध्यक्ष, आर्यसमाज सिहोर (महेन्द्रगढ़)

मासिक सत्संग में मुख्य वक्ता डॉ० सुरेन्द्र कुमार अपने विचार रखते हुए।

मासिक सत्संग में सभा प्रस्तोता आचार्य सर्वमित्र आर्य अपने विचार रखते हुए।

मासिक सत्संग में भजनोपदेशिका स्वामी दयानन्द के मधुर भजन प्रस्तुत करते हुए।

मासिक सत्संग में उपस्थित आर्यजन।

आर्य समाज गुरुग्राम के वार्षिक उत्सव में अपने विचार रखते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

पानीपत के अलुपुर गांव में वेद प्रचार करते हुए आचार्य अभय आर्य एवं उनकी टीम।

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल अम्बाला में यज्ञ की प्रथा आरम्भ की गई।

विवेकानन्द स्कूल अम्बाला कैंट में हवन का आयोजन किया गया।

ओ३म्

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर

आचार्य बलदेव जी

03 जून 2018 से 10 जून 2018

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ, रोहतक

पंजीकरण प्रारम्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर का आयोजन किया जा रहा है। आर्य समाज शिविरों के माध्यम से युवाओं को नशामुक्ति, चरित्र निर्माण, वैदिक संस्कार, ब्रह्मचर्य शिक्षा, राष्ट्रसेवा की भावनाओं को भरकर अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। अतः आप सभी से निवेदन है कि इस दूषित वातावरण में अपनी सन्तानों को सुसंस्कार देना चाहते हैं तो आप अपने बच्चों को इस शिविर में जरूर भेजें।

आवश्यक सामान 2 खाकी हॉफ पेन्ट, 2 सफेद सैण्डो बनियान, सफेद जूते, 2 सफेद मौजे, 2 लंगोट, लाठी, कॉपी-पेन, हल्का बिस्तर, थाली, चम्मच, गिलास एवं अन्य दैनिक उपयोगी सामान।

नोट
- शिविरार्थियों को 03 जून को प्रातः 9 बजे तक शिविर स्थल पर पहुंचना अनिवार्य है।
- अपने साथ मोबाइल, कैमरा एवं अन्य कीमती सामान साथ न लाएं।
- शिविर में पूर्ण अनुशासन में रहना होगा अन्यथा उसे शिविर से पृथक् कर दिया जाएगा।

प्रवेश शुल्क
300 रु/- (दो पासपोर्ट साइज फोटो साथ लाएं।)
शिविर केवल 13 से 20 वर्ष के लड़को के लिए है।

निवेदक : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ, रोहतक 08199938001, 9416503513

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

"आर्य प्रतिनिधि" लौटाने का पता :

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा